Chapter-5

पंचम अध्याय

प्रचलित एवं अप्रचलित माण्ड तथा कुछ माण्ड गीतों की स्वरलिपी

केसरिया बालम :- स्वरलिपी

	गम	पध पधनिसां -	निसां ध धनि
	केऽ	सरि याऽऽऽ ऽ	बाऽ ल म
पध पनि धप	मग रेग - सा	मरे म म	प धनि धप
आऽ वोऽ ऽऽ	नीऽ ऽऽ ऽप	धाऽ रो ऽ	म्हा रे ऽऽ
प -- --	-- -- पनि	नि सां --	नि धनि धनि
ढे ऽ -स	ऽ ऽ ऽप	धा रो ऽ	म्हा रेऽ ऽ
पध पनि धप	मग - गम	पध पधनिसां -	
देऽ ऽऽ ऽस	जीऽ ऽ केऽ	सरि याऽऽऽ ऽ	

गीत :- केसरिया बालम आवौनी पधारो म्हारे देश,
पधारो म्हारे देशज़ी, केसरिया बालम ....

(१) आवण जावण कह गया, कर गया कौल अनेक,
गिणता - गिणता गिस गई म्हारे आंगलि़या री रेख ।
केसरिया.................

(२) जो मैं ऐसो जाणती प्रीत करे दुख होय,
नगर ढिढोंरा पीटती प्रीत न करियो कोय
केसरिया.................

(३) मरुधर थारे देश में निपजे तीनरतन,

इक ढोलो, दूजी मारवण, तीजो कसूमल रंग ।

केसरिया......................

भावार्थ : - इस गीत में नायिका नायक को केसर जैसा सुन्दर विशेषण से सम्बोधित करते हुए नायक को अपने देश आने का आग्रह कर रही है ।

→ गीत के प्रथम दोहे में नायिका - नायक को कह रही है कि तुमने (नायक) मुझसे जाने और जल्दी आने का वचन दिया था किन्तु तुम्हारी राह देखते हुए ऊँगलियों पर दिन गिनते - गिनते मेरी ऊँगलियों की रेखाएँ ही घिस गई पर तुम अभी तक नहीं आए हो।

→ विरहणी नायिका कहती है कि अगर मैं ये जानती कि प्रीत करके मुझे दुख ही (विरह) प्राप्त होगा तो पूरे नगर में ढिढोंरा पिटवा देती कि कोई भी प्रीत ना करे ।

<u>स्वरलिपी</u> - ममूल (काली, काली काज़लिये री रेख)

स्थाई :-

ग	ग	- म	रे ग	सा	-	रे	म	म	प	ध	- प
का	ली	ऽऽ	काऽ	ली	ऽ	का	ज़	लि	ये	री	ऽऽ
-	निं	पध	निध	प	-	म	ग	- म	प	ध	- प
ऽ	रे	ऽऽ	ऽख	जी	ऽ	का	ज	ऽली	ये	री	ऽऽ
-	नि	पध	निप	प	-	धरे	सां	-	निसां	धध	- -
ऽ	रे	ऽऽ	ऽख	जी	ऽ	बूऽ	रो	ऽ	डांऽ	भुर	ऽऽ
पध	म	-	पप	ध	-	प-मध	पप- -	- म	गरे	सा	सा
जाऽ	में	ऽ	चम	के	ऽ	बीऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽज	लीऽ	ऽ	ढो
रे	म	म	धपधप	मपध	- ध	म	प	-	सांनि	रेंसा	धप
लै	री	अे	मूऽऽऽ	ऽऽम	ऽल	हा	लै	ऽ	तोऽ	ऽऽ	ले ऽ
ग-गम	रे	सा	सारे	ग	पम	ग	रे	-सा	म	-	-
चाऽऽऽ	लूँ	ऽ	मरू	ध	ऽर	दे	ऽ	ऽस	में	ऽ	ऽ

अन्तरा :-

ग	ग	- म	रे ग	सा	-	रे	म	म	प	ध	प
सी	स	ऽ मू	मल	रो	ऽ	बा	ग	डि	यो	ना	ऽ
नि	पध	निप	धनि	प	-	-	गपधनि	सां	सां	सां	निसां
रे	ऽऽ	ऽऽ	ऽख	जी	ऽ	ऽ	हांऽऽऽ	ऽ	वे	णी	तोऽ
-	-	-	पध	सांरें	गंसां	रेंगं	सां	-	सां	सां	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	वी	णीं	ऽ
निसां	ध	-	पध	म	-	प	ध	ध.	म - मध	पप- -	-म
तोऽ	मू	ऽ	मल	री	ऽ	बा	स	ग	नाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ ग
गरे	सा	सा	रे	म	म	धपमप	मपध-	ध-	म	प	-
ज्यूँ	ऽ	ढो	लै	री	अे	मूऽऽऽ	ऽऽमऽ	लऽ	हा	लै	ऽ
गपधनिसा-	निरेसांनिपप	धप	गम- मग	रे	सां	सारे	ग	पम	ग	रे	- सा
तोऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽ	लेऽ	चांऽऽऽ	लूँ	ऽ	मरु	ध	ऽर	दे	ऽ	ऽस
स	-	-									
मै	ऽ	ऽ									
x			0			x			0		

गीत :- काली काली काज़लिये री रेख रे
भूरोड़े भाखरमें चमके बीजली,
ढोले री एक मूमल, हालै तो ले चालूँ ए मरुधर देश में,
मिठ बोली ए मूमल हालै तो ले चालूँ मरुधर देस में,
सीस मूमल सा रो बागड़िया ना रेखजी ज्यूँ वेणी तो मूमल
री वासग ना ग ज्यूँ ।
नाक तो मूमल सा री सूवा केरी चोंच ज्यूँ,
आखँया तो मूमल री प्याला मद भरया
दाँत तो मूमल सा रा दाड़म केरा बीज ज्यूँ
होंट तो मूमल हा रेशमिये तार ज्यूँ ।

पेट तो मूमल सा रो पिपलिये रे पान ज्यूँ,

हिवड़ो तो मूमल रो साँचे ढालियो ।।

नख़राली मूमल हालै तो जावाँ मरुधर देश में ।

रंग भीणी मूमल, हाले ....

प्रस्तुत "माण्ड" का भावार्थ पृष्ठ सं. ८६ पर संलग्न है ।

♫♫♫♫♫

स्वरलिपी :- थाने पंखियो ढुलाबूं सारी रैन

			नि	नि	ध	सां	सां	-	निध	नि	धप	प	-ध	नि	नि	नि	ध
			बा	ल	म	यां	ही	ऽ	रहो	ऽ	नाऽ	दा	ऽन	प	-ना	मा	रु
सां	सां	-	निध	नि	धप	प	-	प	नि	ध	नि	प	ध	-प	म	म	म
मे	ला	ऽ	रहो	ऽ	नाऽ	दा	ऽ	न	ओ	था	नै	पं	खि	-	यो	ऽ	ढु
गरे	गरे	ग	म	प	ध	पध	सां	-नि	ध	म	ध	प	ग	-	सा	रेग	सा
लाऽ	ऽऽ	वूँ	सा	री	-	रेऽ	ऽ	ऽण	बा	ल	म	यां	ही	ऽ	रहो	ऽऽ	ना

अन्तरा (दोहा)

नि नि नि	निनि निनि -नि	सांनि धनि प-	सांसां सांसां निध	निनि सां -
ता ती लू	नहि लग ऽण	दूँऽ ऽऽ ऽऽ	हिय तल शीऽ	तल ए ऽ
- - -	सा ध ध	ध धध ध	-ध निध पध	प प -
ए ऽ ऽ	ण रा खू	रा जन रा	ऽजै नैऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ
सां सां निध	निनि सां -	- - -	माँ - -	
दा सी पण	दिन रै ऽ	ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ	

गीत :- बालम यां ही रहो नादान, पन्ना मारु मेला रहो नादान (ओ)
धाने पंखियो ढुलावूँ सारी रैण, बालम या ही रहो नादान
ताती लू नहिं लगण दूं हिय तल शीतल एण
राखूँ राजन राजै नै दासी वण दिन रैन
चंगा मारु (गाढ़ा मारु) यां ही रहो नादान
थानै बातां में बिलमावूँ सारी रैण, बालम या ही रहो नादान
ग्रीष्म में नागर पिया, करो पिया को कैन
खस परदे की ओट बस, निस दिन करिये चैन ।

भावार्थ :- इस गीत में नायिका नायक को "पन्ना मारु" से सम्बोधित करती है तथा नायक को उसके पास ही रुकने का आग्रह करती है। मै (नायिका) तुम्हें लू (गर्म हवा) नहीं लगने दूँगी हिय तक शीतलता दूँगी, तुम्हें राजा के समान रखूँगी दिन-रात दासी बन कर रखूँगी, हे प्रियतम मैं (नायिका) तुम्हें सारी रात बातों में बिलमाकर रखूँगी तुम यहीं पर रहो । गर्मी में खस के पर्दे की ओट में आप आराम कीजिए, मै सारी रात पंखें को झलूंगी, प्रियतम आप यहीं रहो ।

♫♫♫♫♫

स्वरलिपी आवोजी भँवर अलबेला — कहरवा

स्थाई :

- गग ग म	प ध नि सां	धनि निप - सां	नि धप मग रेग
- आवों जी भ	वँ र अ ल	बेऽ लाऽ - र	म्हा रेऽ मह लाँ
सा गग ग म	प ध नी सां	निध पध प -	- - - -
- आवो जी भं	व र अ ल	बेऽ ऽ ला ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा :

नि निनि नि निनि	नि नि सांनि धनि	प - सां सां	सां निध नि नि
सा जन सा जन	म्हें क रांऽ ऽऽ	- - सा ज	न जीऽ व ज
सां - - -	मम मम म म	प - प पध निसां	धनि - - प
डी ऽ ऽ ऽ	सूर तलि खा दूँ	चू ऽड लेऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ ऽ तो
सांसां सां निध - नि	सा - - -		
निर खूँ घड़ी - ध	ड़ी ऽ ऽ ऽ		

गीत :- आवोजी भवँर अलबेला, र म्हारे म्हलाँ,
आवोजी भवँर अलबेला

दोहा :- साजन साजन म्हें कराँ, साजन जीव जड़ी,
सूरत लिखादूँ चूड़ले तो निरखूँ घड़ी घड़ी
आवोजी भवँर

दोहा :- नैनन की कर कोटरी पुतली देऊ बिछाए,
पलकन की चिक डार दयूँ साजन लेंहु छिपाय
आवोजी भवँर अलबेला ....

दोहा :- मोरा बिन डूंगर किसा, मेह बिन किसी मल्हार,
तिरिया बिना तीजां किसी, पिव बिन किसा सिंणगार।
आवोजी भवँर अलबेला

प्रस्तुत "माण्ड" का भावार्थ पृ.सं ८१ पे संलग्न है ।

"प्रस्तुत "माण्ड" गीत "लोकस्वर" नामक पुस्तक से लिया गया है".

स्वरलिपि ओलूंड़ी-दीपचंदी

	नि नि सां नि	ध प प	प नि ध प
	ओ लूं ड़ी ल	गा य नै	सि ध नै ऽ
मग ग -	मध पम प म	ग ग सारे	सा सा - -
चा ल्या ऽ	ओऽ ऽऽ ऽ बा	दी ला ऽऽ	रा जा ऽ ऽ
- - -	सा सा सा सा	ग ग म	पध निसा निसा ध
ऽ ऽ ऽ	ढो ला म्हासूं	ने ह ड़	लोऽ ऽऽ ऽऽ ल
मग - ग	पध पनि ध प	म ग -	म ग सा सा
गाऽ ऽ य	बाऽ ऽऽ ल म	भू ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ग
सा - -			
या ऽ ऽ" [१]			

गीत :- ओलूंडी लगाय नै चाल्या ओ बादीला राजा
ढोला म्हासूं नेहड़लो लगाय बालम भूल गया
साजन यूं मत जाण जै तो बिछड़यां मो चैन
ढव की डाढी लाकड़ी सिलगत सारी रैन
साजन मन और दूध की जिनकी उलटी रीत
दूध फटा घी कहाँ गया, मन फटकत गई प्रीत
ओलूंडी ऽऽऽ

१ "लोक स्वर" श्री रामलाल माथुर जी पृ.सं.- ११२

भावार्थ :- प्रस्तुत गीत में नायिका, नायक के लिए बोल रही है कि प्रियतम तुम नेह लगाकर कहाँ चले गए, मुझे तुम्हारी याद आती है, साजन तुम ये नहीं समझ लेना कि तुम्हारे जाने के बाद मुझे तनिक भी चैन मिलता है, मैं (नायिका) विरहाग्नि में निरन्तर ही जल रही हूँ जिस प्रकार एक बार सुलगाई हुई लकड़ी रात भर जलती है । हे साजन मन और दूध कि रीत उल्टी है, जिस प्रकार दूध के फटने पर घी नहीं बनता उसी प्रकार मन के फट जाने पर प्रीत कहाँ टिकती है ।

♫♫♫♫♫

स्वरलिपी लटपट दाई नागर बेल कहरवा

स्थाई :

- सांसां सां सां	निनि नि ध धध	प -म पध ध	प -म गरे सा
- लट प ट	छाई ओ ना गर	बे ऽऽ लऽ क	रे ल वाऽ ऽ
सां सांसां सां सां	निनि नि ध धध	प -प पध सांरें	गंरें सां सां सां
ओ लट प ट	छाई ओ ना गर	बे ऽल ओऽ ऽऽ	ऽऽ छा य र
नि नि ध ध	प -म पध ध	प -म गरे साग	रेसा सारे म म
ही हो चा रुं	मे ऽऽ रऽ क	रे ऽल वाऽ ऽऽ	ऽऽ लट प ट
पप पम पध पध	प - - प		
छाई ओऽ नाऽ गर	बे ऽ ऽ ल		

अन्तरा :

सां सां सां सांसां	-निं रेंसां निध ध	प पम मध धध	पनि निनि -नि निध
थां रे आं गण	नीऽ मड़ी जीऽ ओ	म्हा रेऽ आंऽ गण	नीऽ मंभ वरं साऽ
प पम मध धध	प -म पध सारें	गंरें सांसा सांसां सांसां	-नि -सां धप पम
म्हा रेऽ आंऽ गण	नी ऽम ओऽ ऽऽ	ऽऽ नीऽ मंच ढ़ीन	ऽनी ऽस रीतो म्हानै
म मरे रेप प	म मग मप प	म मरे मप प	म मग मप प
गै रीऽ आऽ वै	नीं दभं वर सा	गै रीऽ आऽ वै	नीं ऽऽ दऽ क
म ग रेसा सा	- सांसां सां सां		
रे ल वाऽ ऽ	ऽ, लट प ट		

गीत :- लट पट छाई नागर बेल करेलवा

छाय रही चारुमेंर करेलवा

लटपट छाई नागर बेल

थारे आंगण नीमड़ी जी म्हारे आँगण नीम भँवर सा,

नीम चढ़ी नै नीसरी तो म्हाने गैरी आवै नींद

करेलवा....................

थारे आंगण ओवरी-रे म्हारे आंगण कोट

कोट तलै कर नीसरी मै कर घूँघट की ओट

करेलवा ....

पर नारी पैनी छुरी रे मत लगावो अंग,

घर रावण रो ढह गयो रे पर नारी रे संग

करेलवा ....

→ यह गीत मुख्यतः लंगाओं द्वारा गाया जाता है, श्रृंगार रस युक्त इस गीत में कलाकार छोटी-छोटी तानों का प्रयोग बखूबी करते हैं।

♫♫♫♫♫

स्वरलिपी छप्पर पुराणा पिया - चार मात्रा की लय

स्थाई :-

- सासा सा रे	ग म ग म	- गम प प	प धप म ग
- छप र पु	रा णा पि या	ऽ पऽ ड ग	या ऽऽ रे ऽ
म रेग ग गरे	सा - रेग मग	रेग रे - -	रे धरे रे रे
ऽ तिड क णऽ	ला ऽ गाऽ ऽऽ	बांऽ ऽ ऽ ऽ	स तिड़ क ण
रेग गरे गप म	गम रेग ऽ सा	साप पध म ग	म रेग ग सा
लाऽ गाऽ पिऽ या	ऽऽ बांऽ ऽ स	ओऽ जीऽ पि या	ऽ बांऽ ऽ स
सा सा सा सा	सा गरे सानि़ धनि़	प़ सासा रेग म	ग रेग ऽ गरे
अ ब घ र	आ येऽ जाऽ ऽऽ	ऽ गोरी राऽ ऽ	ऽ साऽ ऽ यऽ
सा - रे नि़	सा - - -		
बा ऽ ओ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ		

गीत :- छप्पर पुराणा पिया पड गया रे, तिड़कण लागा बांस,
तिड़कण लागा बांस ओजी पिया बांस,
अब घर आये जा गोरी रा सायबा ओजी ऽ ऽ ऽ ....
बादल में चमके ढोला बीजली जी, महलां पे डरपे जी नार
महलां पे डरपे घर की नार, ओ जी पिया नार
अब घर आये जा तिड़कण ....

कागद हो तो पिया बांचलूँ जी करम ना बांच्या जाय

करम ना बांच्या जाए, होजी पिया

अब घर आये जा ....

छप्पर पुराना ....

कूवो हो तो डाखलूँ पिया समदर ना डाक्यो जाए

समदर डाक्यो जाए होजी पिया

अब घर आए जा

छप्पर पुराणा पिया..................

भावार्थ :- इस गीत में नायिका नायक से दूर होने पर उसे वापस घर आने का आग्रह कर रही है । गीत के माध्यम से विरह को दर्शा रही है, पिया (नायक) तुम्हें परदेस गए हुए इतने दिन हो गए कि छप्पर भी पुराना हो गया और बांस भी तिड़कने लगा है अब तो घर लौट आओ ।

- कागज़ हो तो पिया पढ लूँ पर किस्मत में क्या लिखा है ये पढ़ा नहीं जाता
- कुएँ की दूरी हो तो उसे पार किया जा सकता है किन्तु समुद्र जितनी दूरी

कैसे पार की जाए। अतः इस गीत के माध्यम से विरहिणी अपने उद्‌गार प्रकट कर रही है।

♫♫♫♫♫

स्वरलिपी झालो मासू दियो हू ना जाए - चार मात्रा की लय

						रे	ग	नि	ऽसा	रे	म	रे	प	ध	ग
						झा	लो	मा	ऽसु	दि	यो	हू	ऽ	ऽ	ना
म	-	-	-	-	ग	ध	-	ध	-	नी	ध	नी	ऽ	प	ग
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	झा	लो	मा	ऽ	सू	दि	यो	ऽ	हू	ना
म	-	-	-	-	ग	ध	-	ध	-	नी	ध	नी	ऽ	प	ग
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ए	हे	ऽ	माँ	हे	ऽ	लो	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ती
म	-	-	-	धनी	निसांरेंसा	ध	-	नि	ऽसा	रे	म	रे	प	ध	ग
ला	ऽ	ऽ	ज	झूम	लूँऽऽऽ	झा	लो	मा	ऽसू	दि	यो	हूँ	ऽ	ऽ	ना
म	-	-	-												
जा	ऽ	ऽ	ऽ												

गीत :- झालो मासू दियो हूँ ना जाए,
हे मों हेलो देती लाज, झूम लूँ,
झालो मासू दियो ....

♫♫♫♫♫

बायरियो (माण्ड)   दादरा-ताल

"धीमों मुदरो बाज रै बायरिया

बायरिया, धीमो मुदरो बाज

सात रे महेल्यां रे भूलर बायरिया

पाणीड़े ने गई रे तालाब

पाणीड़े ने गई रे तालाब, बायरिया

सैणा रा बायरिया धीमों मुदरो बाज ।

घड़ियो नहीं डूबे (म्हारो) बेडियौ रे महाराजा

ईडोणी तिर - तिर जाए

ईड़ोणी तिर - तिर जाए बायरिया,

सैणा रा बायरिया धीमों मुदरो बाज

घडियो रे उखणाती अंगड़ो रे मेडियों

टूटी म्हारी बाजूबंद की लूंब, बायरिया

सैणा रा बायरिया धीमो मुदरो बाज

दरजी मँगाऊ बाडमेर सू बायरिया

सिड़ाबूँ बाजूबंद री लूम, बायरिया

सैणा रा बायरिया धीमों मुदरो बाज

तालरिया उड़ाया कांकरिया महाराजा

घडियो उड़ाई रेत

सैणा रा बायरिया

आवै देखणिये री लैट रे महाराजा

आवै रे ठंडोटी, हिलौर

आवे रे ठंडोटी हिलौर रे बायरिया

बरसाले रा बायरिया, धीमो मुदरो बाज
काज़ल सूं भरियो कूपलौ रे बायरिया,
महेन्दी सू भरियो हाथ
आज तो ढोला जी ऊमण - दुमना
बिरंगा लागौ थारा नैण
बिरंगा लागै थार नैण बायरिया
सैणा रा बायरिया ...." [१]

भावार्थ :- इस गीत के माध्यक से नायिका पवन को सम्बोधित करते हुए कि हवा तुम धीरे चलो क्योंकि मेरे वस्त्र, मेरे आभूषण मेरे नयन मेरा सौन्दर्य तुम्हारे तीव्र गति से चलने से परेशान हो जाते हैं । ये गीत मुख्यतः लंगा व मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अत्यधिक गाया जाता है ।

♫♫♫♫♫

१ राजस्थानी गीत रो गजरो - श्री रवि प्रकाश नाग पृ.सं.- १६२

प्रचलित एवं अप्रचलित माण्ड

आखँड़ली फरुके :-

म्हारी आँखड़ली फरुकै, ढौलें सा रो करियो कै मोर
गहूँ कै, म्हारे रे जलालौ बिलालौ कद आवसी रे
आखँड़ली ....
हाँ जी, कौरे के करवौरे, अें जल भरयौ रे
ज्यां मै चूस्यौ जाय,
हाँ रे ढोला चतुर हावै तो रे अै पिवलै रे
मूरख तिरस्यो जाय,
म्हारी रे चांदी रो बादल, घर कद, ओ आवसी रे
आखँडली ....
हाँ जी ढोला, भोजन भरियौ रे, अे, वाटको रै
रे चिड़िया चुग चुग जाय ।
हाँ जी ढोला, चतुर हो वै तोरे अै जीम लै रे,
मूरख भूखौ जाय ।
म्हारो रे लंका रौ लोढारु घर
कद से आवसी रे धरणरी
हाँजी रे चंदण पडियौ रे ओ चौहटे रे
लैऊड़ा फिर फिर जाय
हाँजी ढोला आसी रै चंदण रो रे, अे,
पारखू रे लेसी मोल चुकाय
म्हारौ रे ऊग तो सूरज घर कद अे आवसी रे

हाँजी ढोला कांइ रे मूरख री अै, दोसती रे,

भीड़ पड़्या भग जाय,

म्हारे रे जलालौ बिलालै घर कद अे, आवसी रे

आखँड़ली................

भावार्थ :- नायिका कहती है कि उसकी आँख फड़क रही है, प्रियतम आप घर कब आओगे । जल का करवा, भोजन का थाल, आपके स्वागत में तैयार रखा हुआ है । आप शीघ्र आवें अन्यथा जल तो चुस - चुस का बह जायेगा । भोजन चिड़िया चुग जायेगी, तथा चंदन का मोल कोई दूसरा पारखी चुका देगा ।

हे ! प्रियतम मूरख की मित्रता कच्ची होती है आप तो चतुर हो, मेरे विरह की भावना समझ कर तुरन्त घर पधारें ।

♫♫♫♫♫♫

प्रस्तुत माण्ड "राजस्थानी गीतों रो गजरो" से ली गई है ।

माण्ड / दीपचन्दी

"पेचां बांधे कसन सांवरा तुरिया मेरे घर कसनार

बनाओ म्हारा, रामचंदर अवतार

बना तो म्हारा सरी किसन अवतार

बना री घोड़ी रिम झिम करती जाए ।

नालेरो कोट चिरणाया जाए ।

बना री घोड़ी रिम झिम...." [१]

भावार्थ :- बना (दूल्हा या नोशा) कृष्ण की भांति पगड़ी बांधता है । तथा घर की स्त्रियां तुर्रिया पहनती हैं । मेरा बन्ना तो श्री कृष्ण और श्री राम का अवतार (जैसा ही सुन्दर) लग रहा है । बने की घोड़ी रुनझुन - रुनझुन करती ढुमकती ढोलती है, जिससे गुलाब गर्द या पताशों की बारिश बरस रही है ।

प्रस्तुत बन्ने की तुलना श्री रामचन्द्र से की गई है।

♫♫♫♫♫

१ राजस्थानी गीतों रो गजरो - " रवि प्रकाश नाग " १५९

माण्ड / दीपचन्दी :-

बनड़ी तो आभै बीजली जी म्हारो बनड़ो

सावरिये ऐ मेंह,

चमकण लागी बीजली जी कोई बरसण लाग्यो मेह

ए बीकानेरी तमोलण बनड़ी ने पान चबाय

ए उदयापुर की तमोलण बनड़ी ने पान चबाय

काधो तो चूनो एलची जी कोई और नागरिये पान

कतर - कतर बिड़ला करया कोई चाबों न चतुर सुजान

एक सागांनेरी तमोलण लाड़ली ने पान चबाय

बनड़ी तो काली ए अनार की जी, म्हारो बनड़ो चमेली रो फूल

बिगसी कली एक अनार की, कोई महक्यो चमेली रो फूल

ए जोधाणै री तमोलण बनड़ी ने पान चबाय

ए उदियापुर की तमोलण बनड़ी ने पान चबाय

भावार्थ :- मेरी बनड़ी तो आकाश में चमकती हुई बिजली है तथा बन्ना सावण का मेहं । बिजली चमकने लगी है तथा मेह बरसने लगा । ऐ बीकानेरी, सांगानेर, जोधपुर तथा उदयपुर की तमोलण बनड़ी को नागर पान का ऐसा बीड़ा पेश करो जिसमें कत्था चूना इलायची डला हुआ हो तथा जिसके छोटे छोटे टुकड़े कतर - कतर के किये गये हों । हमारी बनड़ी अनार की कली तथा बनड़ा चम्पा का पुष्प जैसा है बनड़ी विकसित कली तथा बनड़ा चम्पा का पुष्प जैसा है बनड़ी विकसित कली है तो बन्ना सुवासित पुष्प अर्थात दोनों विवाह के योग्य हैं और दोनों की जोड़ी खूब जमने लगी है ।

♫♫♫♫♫

बाई सारा बीरा :-

बाई सारा बीरा म्हाने पीवरिए ले चाल्यो सा,

बाई सारा बीरा म्हाने पीवरिए ले हालो सा,

पीवरिए री म्हाने आलू आवे,

पिया री प्यारी गौरी, सासरिया सुरगों

पीवरिए कि कियाँ ओलू आवे

ओ गोरी पीवरिए कि कियां मन भावे,

थारा माऊ सा म्हासूं पाणी रो भरवावे सा

पतली कमर म्हारी रुड़ रुड़ जाए,

पानी ने भखने गौरी पणियां ना लगा दूँ ए

पतली कमर थारी कियां रुढ़ रुड़ जाए

थारा तो भाई सा म्हासूँ आल चला बोलेसा,

पीवरिए री म्हाने आलू आवे

म्हारा तो बाई सा गौरी बागां री कोयलिया

दिन तो रसी वातो उड़ जासी

म्हारे तो बबल रे साहिबा महल में कोयलिया

पीवरिए म्हाने ओलू आवे, बाई साबीरा म्हाने पीवरिए ले हालो सा.............

बाई सारा बीरा.................

♫♫♫♫♫

प्रस्तुत "माण्ड" बन्नोबेगम जी की सुमधुर आवाज में है तथा शोध प्रबन्ध में संलग्न सी.डी. में है।

आबा दीजों जाबाए बैरन रात
म्हानें म्हारा आलीजा री सेजां
आबा दीजों, जाबाए बैरन रात
अलगारों थईया ढोला सीधा आओ ढोला जी,
वां की थाने हो अण तो जगावो सा
बैरन रात, म्हाने म्हारा आली जा री सेजां
आबा....................
मै तो आपकी दासी ढोला, आप मतवाला ढोलाजी
आंगणियारों गुण करे म्हाने सां बैरन रात
म्हाने म्हारा.................
आधी रैन सुहावनी सो, सलकी रही सब सोय,
जिनको चिन्ता पीव की सो नींद किस विध होए,
आबा ....

♫♫♫♫♫

बादीला म्हाने एकलड़ी मत छोड़ो :-

बादीला म्हानें एकलड़ी मत छोड़ो सा

साहिबरा म्हाने एकलड़ी ओजी मत छोड़ो सा

सियाड़ा री रैन मैं जी म्हारा राज,

सियाड़ा री सर्दी पड़े तो तीजा चाहे चार

तरण पतरणु सोढियो तो रिमझिम करती नार

बदीला म्हाने

सियाड़े सीकर भली तो ऊँधाड़े अजमेर

नाणाणृ निता को भलो ढोला सावण बीकानेर,

बादीला म्हाने...................

माटी का रे दीवला तो सुण म्हारी अरदास,

आज पिया री रात है अरे तू तो जुगिया सारी रात,

बादीला म्हाने....................

♫♫♫♫♫

प्रस्तुत माण्ड श्री चिरंजीलालजी व श्री बनारसी बाबू जी की सुमधुर आवाज में शोध प्रबन्ध में संलग्न सी.डी. में है।

<u>जूरी - थारे ना मारे राड़</u> :-

थारे न मारे नही राड़ नही जूरी,

थाने अन बोले मत जाए

बोलो कहो तो रे ....

अरे थारे न मारे नही राड नही जूरी ....

बागाँ बगीचा में गई जूरी

लाई चपें रा फूल

सुधुँ कहो तो रे..............

थारे ना म्हारे ....

बजाराँ बजाराँ में गई जूरी

लाई मुल - मुल रा थान

देखो कहों तो रे ....

थारे ना मारे ....

आधी रोटी बेसण री ए जूरी

ऊपर नीबूं केरी फाँख

चाख्यो कहो तो रे

थारे................

थारी जो मेड़ी म्हारो दागड़ो रे जूरी

दोनों री अड़ी रही फूट

झाख्यो कहो तो रे, थारे ना मारे ....

♫♫♫♫♫

माण्ड / दीपचन्दी :-

राजस्थान में विवाह के अवसर पर गाय जाने वाला यह प्रसिद्ध लोकगीत पेशेवर गायकों द्वारा अधिक गाया बजाया जाता है ।

अम्बा ऐ म्हारी दशरथ राजकवांर

बनो म्हारे प्यारे लागे ऐ सा,

अम्बा ऐ म्हारी केसरिया कसूमल रो

कसूमल पाग बने हैं, केसरिया जामोसा,

अम्बा म्हारी तुर्रे रा तार हजार

सीस तो सोने हंदा सेहरिया जी लाओ सा

अम्बा म्हारी, मोतियन दाँ रा बनी रे लाँऊ सा ।

चुड़ला बीच - बीच चूपां लगाओ सा

लाड़ली तो ऊँचा, जातरा, बना लाओ सा

लाड़ली जोड़ बनाओ सा ।

♫♫♫♫♫

प्रस्तुत माण्ड स्व. अल्लाह जिलाई बाई जी की सुमधुर आवाज में शोध प्रबन्ध में संलग्न सी.डी. में है।

कलाली :-

भर लाए कलाली दारु दाखाँ रो

ओ, पीवण वालो लाखाँ रो

भर लाये

हो दारु पीओ रंग रमो ओर राता राखो नेने,

पीवन वालो, ए लाखों रो

भर लाये

साजन आया ए सखी और काई भेंट कराँ

थाल भरो गज मोतियाँ सो ऊपर नैन धरा,

पीवन वालो, पीवन वालो, लाखों रो

भर लाये कलाली दारु दाखों रो

क्या दारु मोल के, और क्या दारु अजमेड़

म्हारा राठोड़ा

पीवन वालों, लाखां रे

भर लाये कलाली दारु दाखों रो

ऊचें पाए ढोलीयों और झिनी पड़ी

पीवन वालो, लाखां रो

भर लाये कलाली, दारु दाखाँ रो

हो पी की तो जग जग करे प्यालो करे पुकार

मिरथा नैणी अरजाँ करे और पीवो राजकुवँर

पीवण वालो लाखाँ रो, भर लाये।

♫♫♫♫♫